IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 6.252

Volume 2, Issue 1, June 2022

vk/kk xkao ¼1966½ esa Hkkjrh; lekt

M,- mn;Hkku ;kno

vfLkLVsaV izksQslj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

''राही मासूम रज़ा'' अकेले ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने साहित्य के साथ–साथ सिनेमा के क्षेत्र में, भी अभूतपूर्व सफलता पाई। उनके सरोकार बहुत बड़े रहे हैं। जीवन भर उन्होंने भारतीयता को ध्यान में रखकर लेखन किया ''राही भारत की परम्परागत साझा संस्कृति और विरासत के प्रबल समर्थक थे। वे धर्म की राजनीति करने वालों के सदैव विरोधी रहे। भारतीयता को आधार बना कर ही उन्होंने 'आधा गाँव' लिखा।''[1]

''आधा गाँव' देश–विभाजन, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण पड़ाव है। 'आधा गाँव' देश–विभाजन की वास्तविकता को उद्घाटित करता है और उसकी त्रासदी चित्रित करता है। यह उपन्यास वह विमर्श रखता है जिसमें देश–विभाजन को धार्मिक आधार प्रदान किया गया। साम्प्रदायकिता के कारकों को पहचानने का प्रयास करता है। तथा हिन्दू–मुस्लिम सह–सम्बन्ध को भी व्याख्यायित करता है। आधा गाँव उस सामासिक संस्कृति का रक्षक है जो भारतीयता की परिचारक है। ''समझना होगा असली मुद्दा मंदिर–मस्जिद का नहीं आर्थिक है वे शक्तियों जो जीने के साधन छीन रही हैं और खंजर या त्रिशूल पकड़ा रही हैं, वे जिन्दगी की जड़ो में विष डाल रही हैं। वे सामाजिक संस्कृति के इतिहास और भूगोल को मिटाने पर आमादा हैं। ''आधा गाँव इन शक्तियों को रोकने और मिटाने का आह्वान है। नयी अर्थव्यवस्था या नई राजनीतिक या जीवन जिसमें ए शक्तियाँ पराजित हो सकें, वही आधा गाँव का सन्देश है। इसी सन्देश में आधा गाँव का पूरा राजनीतिक सौन्दर्य निहित है।''[2]

1. देवेन्द्र कुमार गुप्त– राही मासूम रजा और भारतीयता, पृ0– 445
(अभिनव कदम– राही मासूम रजा विशेषांक 6–7)

2. प्रदीप सक्सेना– आधा गाँवः सामाजिक संस्कृति की वास्तविक शक्ति– पृ0– 275 (भविनव कदम–राही मासूम रजा विशेषांक 6–7)

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT